जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

कोटा

Rashtradoot

फोनः- 2386031, 2386032 फैक्सः- 0744-2386033 वर्षः 47 संख्याः 248 प्रभात कोटा, मंगलवार 21 जून, 2022 कोटा/24/2012-14 पृष्ठ 8 मूल्य 1.20 रु.

मार्सूपिअल जीवों की एक प्रजाति, लैंडबीटर पॉसल जब 50 साल तक नहीं दिखे तो उन्हें लुप्त मान लिया गया और 1961 में उनके पुनः नजर आने तक उन्हें लुप्त ही माना जाता रहा। छोटे आकार के ये फुर्तीले जीव अन्य मार्सूपिअल की तरह रात में सक्रिय होते हैं और दिन में पेड़ों के कोटरों में सोते रहते हैं। उन्हें ऐसे जंगल की जरुरत होती है जो ना तो ज्यादा पुराना हो और ना ही ज्यादा युवा हो। क्योंकि रहने के लिए पेड़ों के कोटर के अलावा वो पेड़ों से निकलने वाले तरल का भी सेवन करते हैं। लेकिन जंगल में आग लगने की घटनाओं और बड़ी तादाद में पेड़ कटने की वजह से इनके आवास को गंभीर खतरा है। ऑस्ट्रेलिया में सिर्फ विक्टोरिया में मिलने वाले ये जीव अपने जीनस, जिम्नोबैलाइडिअस की एकमात्र प्रजाति हैं। ऑस्ट्रेलिया की मूल प्रजाति, लैंडबीटर पॉसम विक्टोरिया सैन्ट्रल हाइलैंड्स के 5600 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में सीमित हैं। इसके अलावा मैलबर्न से 50 कि.मी. पूर्व में यैलिंगबो जंगल के दलदली भाग में भी इनका एक समूह रहता है। कीड़े-मकोड़े और फूलों का पराग इनका प्रिय भोजन है। इनकी पूंछ मुगदर जैसी होती है जिसमें ये पेड़ों की छाल को फंसा के ले जाते हैं, जो घर बनाने के काम आती है। ये जीव छोटे-छोटे समूहों में रहते हैं। एक समूह में 4 से 8 पॉसम होते हैं। प्रजनन काल में एक नर एक ही मादा के साथ मेट करता है। लैंडबीटर्स पॉसम तीन विशिष्ट प्रकार के जंगलों में मिलते हैं, लम्बे नम युकलिप्टस वृक्षों वाले वन, सब एल्पाइन वुडलैंड और लोलैण्ड स्वॉम्प फॉरेस्ट (निचले भागों के दलदली वन)। लैंडबीटर पॉसन मीठे पौधों और कीटों को खाते हैं, जैसे सैप्स, गम्स, हनीड्यू, जिनसे इन्हें कार्बोहाइड्रैट मिलता है और कीड़ों से प्रोटीन।

पवार, फारुख के बाद गोपाल गांधी ने भी राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनने से इन्कार किया

विपक्ष की एकता के सोच के खोखलेपन को उजागर किया गोपाल गांधी की इस ''ना'' ने

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 जून। यह विपक्षी दलों का दयनीय दशा को दर्शाता है कि पश्चिम बंगाल के पूर्व राज्यपाल गोपाल कृष्ण गांधी तीसरे ऐसे व्यक्ति बन हैं जिन्होंने राष्ट्रपति पद का प्रत्याशी बनने के विपक्ष के प्रस्ताव को ठुकरा दिया हैं।

इससे पहले नैशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी के प्रमुख शरद पवार और नैशनल कॉन्फ्रेंस के फारूख अब्दुल्लाह ने भी 18 जुलाई को होने वाले राष्ट्रपति चुनावों के लिए संयुक्त विपक्ष का प्रत्याशी बनने से इनकार कर दिया।

सोमवार को जारी एक बयान में गांधी ने कहा कि मामले को गहराई से देखने पर मुझे लगता है कि विपक्ष का प्रत्याशी ऐसा व्यक्ति होना चाहिये जो विपक्षी एकता के अलावा राष्ट्रीय आम सहमति बना सके। मुझे लगता है कि और भी ऐसे लोग होंगे जो मुझसे बेहतर तरीके से यह काम कर सकेंगे। इसलिए मैंने नेताओं से कहा है कि ऐसे ही व्यक्ति को अवसर देना चाहिए। महात्मा गांधी के पौत्र और पूर्व राजनयिक रहे गोपाल कृष्ण गांधी ने कहा कि हो सकता है भारत को ऐसा राष्ट्रपति मिले जैसे अंतिम गवर्नर जनरल राजाजी थे या फिर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जिन्होंने इस पद की शोभा सबसे पहले बढाई थी।

- **विपक्ष ने राष्ट्रपति पद के महत्व को बहुत कम आंका, तथा इस चुनाव को बड़े हल्के व गैर गंभीर तरीके से लिया, तथा भाजपा के लिये खुला मैदान छोड़ दिया गोल दागने के लिये।**
- **अगर विपक्ष वाकई में देश की प्रजातंत्रीय व्यवस्था पर भाजपा-संघ के प्रहार से बहुत आशंकित व आतंकित था, तो इस पद पर विपक्ष के संयुक्त उम्मीदवार के लिये तैयारी कुछ माह पूर्व शुरु होनी चाहिये थी।**
- **क्षेत्रीय पार्टियाँ अपने ही गुरुर में, कांग्रेस से आशंकित रहीं और राष्ट्रपति के चुनाव को वो महत्व नहीं दे सकीं, जो ''समय'' की पुकार थी। ऐसा लग रहा है, जैसे विपक्ष की एकता को केवल मौखिक समर्थन दिया जा रहा था, गंभीरता का नितान्त अभाव था।**

विपक्ष सर्वसम्मत प्रत्याशी के लिए 21 जून को विचार करने जा रहा है और उसके ठीक एक दिन पहले गांधी ने यह घोषणा कर दी है।

पवार, अब्दुल्लाह और अब गोपाल कृष्ण गांधी के इनकार ने साफ कर दिया है कि विपक्षी दलों ने राष्ट्रपति पद के चुनाव का महत्व बहुत कम आ को और भाजपा के लिए मैदान खुला छोड़ दिया। क्षेत्रीय पार्टियों का अपना अलग ही अहं है और कांग्रेस को लेकर भारी संदेह में है इसलिए उन्होंने भी राष्ट्रपति चुनाव को महत्व नहीं दिया। इस प्रकार भाजपा के पास पूरा मौका है।

अगर विपक्षी दलों को देश के लोकतांत्रिक ढांचे पर मंडरा रहे खतरों की चिन्ता होती तो वे महीनों पहले से इस प्रतिष्ठित मुकाबले की तैयारी शुरू कर देते। विपक्षी दल एकता की सिर्फ

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

साध्वी का निधन

जोधपुर, 20 जून (कासं)। जैनाचार्य योग तिलक सूरिश्वर महाराज की आज्ञानुवर्ती साध्वी हितज्ञा की शिष्या साध्वी शास्त्रज्ञा का आज सुबह पाली से जोधपुर की तरफ विहार करते समय खारड़ा टोल के निकट तेज रफ्तार कार की चपेट में आने से निधन हो गया।

घटना स्थल पर मौजूद लोगों का कहना है कि टक्कर इतनी जोरदार थी की

- **जैन साध्वी शास्त्रज्ञा का पाली से जोधपुर जाते समय तेज रफ्तार कार की चपेट में आने से निधन हो गया।**

साध्वी 20 फुट ऊपर उछल कर गिरी, जिससे उनकी मौके पर मौत हो गई। दुर्घटना की सूचना पर रोहट पुलिस व पाली से जैन समाज के लोग घटना स्थल पर पहुंचे। चिंतक सोहन मेहता व महावीर शासन स्थापना महोत्सव समिति के राष्ट्रीय महामंत्री धनराज विनायकिया ने कहा कि इस दुखद घटना से देश भर के जैन समाज शोक की लहर है। उन्होंने कहा कि पिछले माह में दो सन्तों के दुर्घटना में हुए निधन से आहत जैन जगत उस हृदयविदारक घटना से उभरा ही था कि फिर से इस लोमहर्षक हादसे से वह सकते में आ गया है। साध्वी के देवलोक गमन पर भैंरूबाग जैन तीर्थ तपागच्छ ट्रस्ट मंडल क्रिया भवन की ओर से नवकार महामंत्र स्मरण करते हुए भाव भरी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

'जेल में कैद एक साधारण कैदी व कारावास में बंद विधायक में फर्क है'

सुप्रीम कोर्ट ने कहा, इस प्रश्न पर और सोचने व मंथन की जरूरत है, पर महाराष्ट्र में कारावास में बंद मंत्रियों को विधान परिषद में मतदान का हक नहीं दिया

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 जून। सर्वोच्च न्यायालय ने महाराष्ट्र विधान परिषद के आगामी चुनावों में महाराष्ट्र के मंत्रियों नवाब मलिक तथा अनिल देशमुख, जो इस समय हिरासत में हैं, को वोट डालने की अनुमति देने से सोमवार को इनकार कर दिया, लेकिन अदालत इस बात पर सहमत थी कि जेल में बंद विधायकों के वोट देने के अधिकार से संबंधित कानून पर विचार किया जाना चाहिये।

ज्ञातव्य है कि पूर्व गृह मंत्री देशमुख कथित भ्रष्टाचार के एक मामले में न्यायिक हिरासत में हैं, जबकि मलिक कथित रूप से मनी लॉन्डरिंग एवं साधनों से अधिक गैर कानूनी सम्पत्ति रखने के मामले में हिरासत में हैं।

- **सुप्रीम कोर्ट के समक्ष यह तर्क भी दिया गया कि, दोनों मंत्री न्यायिक हिरासत में हैं, न कि, पुलिस की ''कस्टडी'' में अतः उन्हें मतदान का अधिकार मिलना चाहिये। सुप्रीम कोर्ट ने कहा, धारा (62/5) में ऐसा कोई अन्तर नहीं किया गया।**
- **बम्बई हाई कोर्ट, जिसने दोनों मंत्रियों को वोटिंग अधिकार नहीं दिया था, ने अपने निर्णय में यह भी कहा था कि, न्यायालय को विधानसभा में मतदान में हिस्सा लेने का अधिकार देने का साधारण तौर पर तब तक कोई कारण नहीं बनता, जब तक किन्हीं कारणों से मतदान के ठीक पहले बहुत से विधायकों को हिरासत में डाल दिया गया हो।**

किन्तु, न्यायमूर्ति सी.टी. रविकुमार तथा सुधांशु धूलिया की बैंच ने कहा कि यह याचिका किसी मैम्बर ऑफ लेजिस्लेटिव असेम्बली (एम. एल. ए.) को अपने विधानसभा क्षेत्र की ओर से विधान परिषद चुनावों में वोट देने के अधिकार के संबंध में एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठाती है।

बैंच ने कहा कि बॉम्बे हाईकोर्ट ने 17 जून को उन्हें वोट देने के अधिकार का उपयोग करने देने से इनकार कर दिया था क्योंकि रिप्रजेन्टेशन ऑफ पीपुल एक्ट की धारा 62(5) कैदियों को वोट देने का निषेध करती है। न्यायमूर्ति धूलिया ने कहा कि तर्क यह दिया जा रहा है कि वे ऐसे अन्य लोगों के निर्वाचित प्रतिनिधि हैं, जो किसी अन्य व्यक्ति का चुनेंगे। यह प्रतिनिधित्व

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

जनरल रावत व अग्निपथ

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 जून। कांग्रेस के नेताओं और कार्यकर्ताओं ने युवा विरोधी अग्निपथ योजना और मोदी सरकार की प्रतिशोध की राजनीति के खिलाफ लगातार दूसरे दिन जंतर-मंतर पर सत्याग्रह किया। कांग्रेस का आरोप

- **कांग्रेस के महासचिव अजय माकन ने कहा अग्निपथ भर्ती स्कीम, दिवंगत जनरल रावत के सोच से विश्वासघात है।**

है कि मोदी सरकार नैशनल हैरल्ड केस में मनी लॉंडरिंग के झूठे आरोप में उनके नेता राहुल गांधी से ई.डी. के जरिए 30 घंटे से भी ज्यादा पूछताछ करवाई है यह सब कांग्रेस पर दबाव बनाने का प्रयास है।

पार्टी महासचिव अजय माकन ने सरकार पर कांग्रेस की छवि खराब करने के झूठी, मनगढंत खबरें फैलाने का आरोप लगाया और कहा कि ए.आई.सी.सी. मुख्यालय को पुलिस छावनी बना दिया गया है पुलिस देश की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अग्निपथ स्कीम अग्निपरीक्षा होगी आगामी वर्ष में

मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ व राजस्थान सुस्थापित परम्परानुसार भारी संख्या में सेना में युवकों को भेजते हैं, और अगले वर्ष इन राज्यों में विधानसभा चुनाव हैं

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 जून। केन्द्र सरकार की अग्निपथ भर्ती योजना की लोकप्रियता/अलोकप्रियता की पहली परीक्षा इस साल में होने वाले तीन लोकसभा तथा सात विधानसभा सीटों के लिये हाने वाले उप चुनावों में भाजपा के प्रदर्शन के माध्यम से हो जायेगी।

इस साल मध्य प्रदेश में स्थानीय निकायों तथा मुम्बई में बी.एस.सी. के चुनाव होने हैं तथा इसके बाद, गुजरात एवं हिमाचल प्रदेश में विधानसभा चुनाव होंगे। 2023 में, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ तथा राजथान में विधानसभा चुनाव होने हैं। ये सभी राज्य परम्परागत रूप से बड़ी संख्या में युवाओं को सैनिकों के रूप में भेजते आ रहे हैं। इसलिये यह प्रश्न पैदा होना स्वाभाविक ही है कि क्या अग्निपथ योजना को लेकर युवाओं की व्यग्रता एक ऐसे आंदोलन का रूप लेगी जो भाजपा की चुनावी संभावनाओं को नुकसान पहुँचा सकती हो?

किसान संगठनों द्वारा डेढ़ साल तक किये गये आंदोलन के बावजूद, भाजपा उत्तर प्रदेश में दोबारा सरकार बनाने में सफल हो गई थी, जो राज्य के पिछले 32 साल के इतिहास में पहली

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- **अग्निपथ स्कीम लोकप्रिय है या अलोकप्रिय, इस स्कीम को इन राज्यों ने स्वीकार किया या नहीं किया, इसका फैसला चुनाव करेंगे।**
- **अग्निपथ की तुलना किसान आंदोलन से करी जा रही है। और, निष्कर्ष निकाला जा रहा है कि, किसान आंदोलन के बाद भी भाजपा यू.पी. जीत कर आयी थी।**
- **यह पूर्णतया सत्य नहीं, क्योंकि 2017 के विधानसभा चुनाव की तुलना में, 2022 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने यू.पी. में 57 सीटें खोयी थीं, तथा सपा के आंकड़े में 64 का इजाफा हुआ था।**
- **अतः डेढ़ साल चले किसान आंदोलन के बाद भी यू.पी. में भाजपा की सरकार तो बनी थी, पर, सीटें काफी कम हुई थीं।**

सुप्रिया श्रीनेत

-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 जून। अस्पताल से डिस्चार्ज होने के कुछ घंटों के अंदर ही, कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने सोमवार को पार्टी प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत को जयराम रमेश की अध्यक्षता वाले

- **कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने पार्टी प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत को कांग्रेस के सोशल मीडिया व डिजिटल प्लेटफॉर्म का प्रमुख नियुक्त किया।**

नए कम्युनिकेशन्स डिपार्टमैंट के सोशल मीडिया डिजिटल प्लैटफॉर्म्स का चेयरपर्सन नियुक्त किया।

सुप्रिया, रोहन गुप्ता का स्थान ले रही हैं, जिन्हें तुरंत प्रभाव से ए.आई.सी.सी. का एक प्रवक्ता बनाया गया है। ए.आई.सी.सी. जनरल सैक्रेटरी (संगठन), के.सी. वेणुगोपाल के एक प्रेस विज्ञप्ति में उक्त जानकारी दी है।

'कोविड-19 की भांति यूक्रेन युद्ध खत्म होता नज़र नहीं आता'

नाटो के सर्वोच्च अधिकारी स्टोल्टेनबर्ग व ब्रिटेन के प्र.मंत्री बोरिस जॉनसन ने अपने-अपने तरीके से यह सोच दोहराया, जर्मनी व इंग्लैंड में

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 जून। कोविड-19 की वैश्विक महामारी जिस तरह से जाने का नाम नहीं ले रही है, उसी तरह से दुनिया को यूक्रेन में एक लम्बे युद्ध के लिए तैयार रहना चाहिए क्योंकि रूस यूक्रेन के पूर्वी हिस्से में अपना नियंत्रण स्थापित करने को लेकर क्रमिक रूप से बढ़त प्राप्त कर रहा है।

यह आकलन है नाटो महासचिव जेन्स स्टोल्टेनबर्ग और ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन का, जिन्होंने क्रमशः जर्मन और ब्रिटिश मीडिया को दिए अलग-अलग बयानों में यह चेतावनी दी हैं।

सी.एन.एन. की एक रिपोर्ट कहती है कि स्टोल्टेनबर्ग और जॉनसन ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के भविष्य के आक्रमण की रोकथाम के लिए रेखांकित किया है कि पश्चिमी देशों की सरकारों को यूक्रेन को अपना समर्थन जारी रखने की आवश्यकता है।

स्टोल्टेनबर्ग ने जर्मनी के अखबार "बाइल्ड आम सॉन्टाग को बताया कि कोई नहीं जानता कि यह संघर्ष कब समाप्त होगा, लेकिन "चाहे इसमें कितना भी धन खर्च हो जाए, हमें इस वास्तविकता के लिये तैयार रहने की जरूरत है कि इसमें सालों लग सकते हैं।"

- **स्टोल्टेनबर्ग ने यह बात कही एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में, तथा बोरिस जॉनसन ने, सण्डे टाइम्स के संपादकीय पृष्ठ पर लिखे आलेख में।**
- **बोरिस जॉनसन ने अपने लेख में कहा, आठ साल से, पुतिन ने यूक्रेन के पूर्वी हिस्से पर आधिपत्य जमाने का अभियान शुरु किया हुआ था, अब वह सपना पूरा नहीं हो रहा। पर, विश्व के संचार तंत्र से कटे होने के कारण, पुतिन शायद इस सत्य से अनभिज्ञ रहेंगे और युद्ध को जारी रखेंगे।**
- **स्टोल्टेनबर्ग ने कहा कि, पुतिन ने 2008 में जॉर्जिया व 2014 में क्रीमिया पर आधिपत्य स्थापित किया था, तथा विश्व चुपचाप देखता रहा, और अब यूक्रेन युद्ध में भी रूस यही उम्मीद कर रहा है। यह विश्व के लिये बहुत खतरनाक सोच है। क्योंकि, अगर रूस ने यूक्रेन पर धीरे-धीरे कब्जा कर लिया, तो क्या "गारंटी" है कि, इससे शान्ति स्थापित हो जायेगी।**

"हमें यूक्रेन का समर्थन करना बंद नहीं करना चाहिए। बावजूद इसके कि इसमें खर्चा अधिक है, हमें ना केवल उसका सैन्य समर्थन करना है, बल्कि ऊर्जा और खाद्य पदार्थों की बढ़ती कीमतों के कारण भी उसका साथ देना है।"

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ने शुक्रवार को कीव का अपना दूसरा दौरा करने के बाद संडे टाइम्स में लिखे एक लेख में कहा कि पश्चिमी सहयोगियों को एक लम्बे युद्ध लिए तैयार रहना चाहिए क्योंकि पुतिन नृशंसताएं कर यूक्रेन को सताने की कोशिश कर रहे हैं और दमनात्मक कार्रवाई पर उतर आए हैं।

जॉनसन ने कहा कि यूक्रेन के अधिकांश पूर्वी हिस्से को कवर करने वाले दोन्बास पर कब्जा कर लिया गया है। यह पिछले आठ सालों में पुतिलन कर उद्देश्य रहा है क्योंकि इसी को लेकर उन्होंने एक अलगाववादी विद्रोह भड़काकर अपना पहला आक्रमण किया था।

रूस जहां अपना उद्देश्य अब भी पूर्ण नहीं कर पाया है, वहीं "पुतिन को यह एहसास नहीं होगा कि यूक्रेन की पूर्ण विजय की उनकी महा साम्राज्यशाली योजना विफल कर दी गई है, लेकिन फिलहाल अलग-थलग रह रहे पुतिन अब भी यह सोचते होंगे कि पूर्ण विजय संभव है।"

रूस के भविष्य के आक्रमण को टालने की आवश्यकता पर जोर देते हुए नाटो प्रमुख ने कहा कि यदि पुतिन इस युद्ध से सबक लेकर यह सोचते हैं कि वर्ष 2008 के जॉर्जिया युद्ध और वर्ष 2014 में क्रीमिया का अधिग्रहण करने के जैसे वह इस युद्ध को भी जारी रख सकते हैं तो हमें एक भारी कीमत चुकानी होगी। जॉनसन ने प्रश्न किया कि रूस की फौज के नियंत्रण में यूक्रेन के जो क्षेत्र हैं, यदि राष्ट्रपति पुतिन उन सभी क्षेत्रों को अपने पास रखने में स्वतंत्र रहते हैं तो क्या होगा। यदि उन्होंने इस विजित क्षेत्र

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

महात्मा गांधी के पौत्र का इन्कार

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 जून। विपक्ष के समक्ष इस समय एक बहुत बड़ी उलझन एवं मुश्किल यह है कि उसके पास 18

- **गोपाल गांधी ने कहा, राष्ट्रपति पद का विपक्ष का उम्मीदवार ऐसा व्यक्ति होना चाहिये जो सर्वसम्मति से स्वीकार्य हो, और इस कार्य के लिए मेरे से बेहतर अन्य बहुत लोग हैं।**

जुलाई को होने वाले राष्ट्रपति चुनाव के लिये कोई उम्मीदवार नहीं है।

18 जुलाई को होने वाले राष्ट्रपति पद के आसन्न चुनाव के लिए विपक्ष के संयुक्त प्रत्याशी के चयन के लिये होने वाली विपक्ष की दूसरी मीटिंग से एक दिन पहले, महात्मा गांधी के पौत्र गोपाल

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)